संगीत विधा के माध्यम से ग्रामीण परिवेश के बच्चों का कलात्मक विकास

संगीत विषय में पी.एच.डी. की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

आरती सरीन

शोध- निर्देशिका

प्रो. लवली शर्मा (सितार)

संगीत विभाग

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा - 282005

2023

भूमिका:

संगीत शिक्षा आत्मा की शुद्धि का साधन है। क्योंकि संगीत साधना में लीन हो कर व्यक्ति परम ब्रह्मा को प्राप्त कर लेता है, संगीत अथवा नाद को ही साक्षात् ईश्वर की संज्ञा दी है। अतः उस साक्षात् ब्रह्मा की साधना निश्चय ही आत्म-शुद्धि का सर्वश्रेष्ठ साधन मानी जाएगी। इस तथ्य की पुष्टि निम्न श्लोक से होती है-

'तस्य गीतस्य माहाऽऽत्मयं कं प्रशंसितुमीश्ते।
धर्मार्थिकाममोक्षाणामिदमे वैकसाधनम् ॥'

अर्थात् भगवद् भजन (साधना) से धर्म, राजाओं व प्रभुओं से मिले सम्मान के रूप में अर्थ, अर्थ से काम तथा अन्ततः मोक्षप्राप्ति का यही एक मात्र साधन है।

"कलाकार कोई विशेष व्यक्ति नहीं होता,
मगर हर व्यक्ति विशिष्ट कलाकार है।"

-महान कला चिंतक आनंद स्वामी

हम अपने दैनिक जीवन को किसी न किसी रूप में कलात्मक बनाने का प्रयास करते हैं। हमारे मन में व व्यवहार में एक खास सौंदर्य बोध व कला बोध निहित होता है। सामान्यत: यह परिस्कृत नहीं होता है। हम अपने घरों को कैसे सजाते हैं, किस तरह के कपड़े पहनते हैं, कैसे बर्तन का प्रयोग करते हैं, उन्हें किस तरह जमाते हैं, चूल्हा- चौका कैसे रखते हैं, इन सब में गहरी कला दृष्टि समायी रहती है लेकिन हम इनके बारे में सचेत नहीं होते हैं, हम उनके बारे में सोचते नहीं है व उनके नष्ट होने का भय भी नहीं करते। यदि हम कलात्मकता के बारे में सचेत होकर चुनाव नहीं करेंगे तो हम बेतरतीब कला खिचड़ियों का शिकार हो सकते हैं, इसलिए जरूरी है कि हम विभिन्न जीवन शैलियों में खासकर हमारी अपनी सांस्कृतिक परंपरा के सौंदर्य बोध के बारे में सचेत होकर समझें।

संगीत भी कला का एक अभिन्न एवं आवश्यक अंग है। जिसका आनंद, बालक, युवा वृद्ध सभी अनुभूत करते हैं। संगीत हमारी संस्कृति को समृद्ध करता है। संगीत एक ऐसी कला है, जो विभिन्न अवधारणाओं तथा कौशलों का मेल है। जो हमें प्रेरित करने, कल्पना करने तथा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह एक प्रायोगिक कला

क्रियात्मक गतिविधि है, जिसमें शरीर तथा मन का एक साथ समन्वय होता है।

संगीत शिक्षा अपने सही परिप्रेक्ष्य में अनुशासित, स्वतन्त्रता एवं तर्कसंगत शिक्षा है। संगीत शिक्षा का अर्थ केवल स्वर ताल युक्त धुनों अथवा रागों को सिखाना मात्र नहीं है। वरन् सारगर्भित रूप में संगीत के साधना पक्ष में विद्यार्थी की श्रद्धा उत्पन्न करना, संगीत के प्रयोगों के प्रति विशाल दृष्टिकोण अपनाते हुए उसके लालित्य एवं रस तत्त्व के प्रति सचेत रहना तथा संगीत के उचित विकास के लिए प्रयत्नशील रहना भी अत्यन्त आवश्यक है ।

संगीत एक प्रकार का गीत है जो किसी क्षेत्र विशेष में लोगों द्वारा पारंपरिक रूप से गाया जाता है तथा वह उनकी संस्कृति का एक हिस्सा भी होता है। वही अगर ग्रामीण क्षेत्र के संगीत की बात की जाए जिसमें हमे ग्रामीण संगीत के ग्रामीण परिवेश की झांकी परिलक्षित होती नज़र आती है । संगीत न केवल ग्रामीणों के लिए मनोरंजन का एक साधन है वरन् ग्रामीण समाज का प्रतिबिम्ब है। फिर भी ग्रामीण परिवेश के बालक -बालिकाएं संगीत को केवल फिल्मी संगीत और मनोरंजन के साधन के रूप में ही जानते हैं । वह इस बात से वंचित हैं कि जो संगीत वह सुनते हैं, वह कैसे बनाया जाता है व संगीत क्या है?

ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में भाषा गणित आदि के विषय तो मिल जाएंगे परंतु संगीत का विषय नहीं मिलेगा अर्थात् संगीत को एक शिक्षण विषय के रूप में हमारे विद्यालयों में स्वीकृत नहीं किया गया है।

किंडर गार्टन व शहरी विद्यालय में वाद्य यंत्र की उपलब्धता तो है तथा इसके साथ ही उनसे गायन वादन भी कराया जाता है परंतु वह संगीत की नींव से अनिभिज्ञ होते हैं। संगीत का प्रयोग आधारभूत संस्कार डालने के लिए नहीं किया जाता है वरन् पढ़ाई को काम बोझीला बनाने के लिए व मनोरंजन के लिए किया जाता है।

संगीत प्राथमिक विद्यालय पाठ्यक्रम का अभिन्न एवं आवश्यक अंग होना चाहिए। संगीत का शिक्षण विद्यार्थियों को सांगीतिक ज्ञान एवं सांगीतिक बोध तो देता ही है, इसके अतिरिक्त वह विद्यार्थी की अनुक्रिया को भी विकसित करता है। इसलिए ही संगीत शिक्षा पूर्ण समझी जाती है। संगीत शिक्षा यदि एक ओर मानसिक विकास करती है तो दूसरी और मनुष्य की आत्मिक शक्ति को विकसित कर उसे आत्मिक दृढ़ता प्रदान करती है, जो कि एक सभ्य एवं सुशिक्षित व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक है। इसी दृष्टि से बच्चों में संगीत शिक्षा की आवश्यकता को महसूस

किया जा सकता है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि बाल-सुलभ मन आनन्दायक एवं आकर्षक क्रियाओं की ओर आकृष्ट होता है तथा उसे आसानी से ग्रहण कर लेता है। अतः बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा संगीत के माध्यम से होनी आवश्यक है। इसी प्रकार परिपक्व होते बच्चों में एकता एवं सद्भाव उत्पन्न करने में संगीत शिक्षा के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। संगीत शिक्षा के माध्यम से अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से अवगत होते हैं क्योंकि संगीत सभ्यता एवं संस्कृति से पूरी तरह जुड़ा हुआ है ।

संगीत विभिन्न भाषाओं के गीत, विभिन्न शब्दों,ध्वनियों को ध्यान पूर्वक सुनने तथा उनके अंतर को समझाने का फल स्वरुप होता है। श्रवण कौशल का विकास संगीत के माध्यम से अत्यंत सहजता से किया जाता है, जो बच्चे में किसी भी विषय के ध्यानपूर्वक अध्ययन व श्रवण की प्रेरणा देता है। गीतों की सीखकर याद करना बच्चे में स्मरण शक्ति की वृद्धि करता है । संगीत की कक्षा में बालक समूह में तथा एकल गीत गायन करता है । गीत के शब्द टूटे नहीं अत: बच्चों को अध्यापक श्वास नियंत्रण द्वारा विश्रांति काल की शिक्षा देते है, यह शिक्षा बच्चों में धैर्य की भावना विकसित करती है।

“संगीत शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि संगीत स्वर एवं ताल में खोकर आत्मा को ऐसे लोक में ले जाती है, जहाँ वह स्वतन्त्र चिन्तन कर पाता है और उसके विचारों की अभिव्यक्ति उसके आचरण में झलकती है ।"

नई शिक्षा नीति 2020 ने शैक्षणिक संस्थानों में शैक्षणिक अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा को सक्षम करने के अलावा संगीत और प्रदर्शन कला के क्षेत्र को बढ़ावा दिया है।

कर्नाटक राज्य डॉ. गंगूभाई हंगल म्यूजिक एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित एनईपी 2020 पर एक कार्यशाला में वक्ताओं ने यह बात कही।

विश्वविद्यालय के कुलपति नागेश वी. बेट्टाकोट ने कहा कि एनईपी संगीत और प्रदर्शन कला के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम और अकादमिक ढांचा प्रदान करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि हालांकि शास्त्रीय नृत्य और संगीत समाज के सांस्कृतिक ताने-बाने का हिस्सा है, लेकिन उनके व्यवस्थित प्रसार और अध्ययन के

लिए अभी तक कोई प्रयास नहीं किए गए हैं। रुचि रखने वाले छात्रों को गुरुओं से सीखने की पारंपरिक प्रणाली के माध्यम से कला के रूप को आगे बढ़ाने के लिए छोड़ दिया गया, जिसने संस्कृति को जीवित रखने में मदद की है।

एनईपी का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि इसका सीधा असर संगीत और प्रदर्शन कला के छात्रों के लिए असंख्य अवसरों के रूप में सामने आएगा। "पहले, वे गाने प्रस्तुत करते थे या कार्यों में प्रदर्शन करते थे, जबकि कुछ संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए विकसित हुए। लेकिन अब उनके पास स्कूलों और कॉलेजों में रिसोर्स पर्सन के रूप में नियुक्त होने के भी अवसर हैं।' उन्होंने बताया कि एनईपी ने शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर संगीत और प्रदर्शन कला में पाठ्यक्रम और ऐच्छिक की पेशकश करना अनिवार्य कर दिया है और यह संगीत और प्रदर्शन कला के अन्य रूपों के छात्रों के लिए एक गेमचेंजर होगा।

उपरोक्त शिक्षा नीति को देखते हुए यदि प्रारंभ से ही बच्चों के भीतर संगीत का बीज डाला जाए तो उनका कलात्मक विकास प्रारंभ से ही होना शुरू हो जाएगा जिससे कि वह अपने भविष्य में उन कलात्मक गुणों का प्रयोग करते हुए संगीत के विभिन्न अवसरों को अपने बेहतर जीवन के लिए प्रयोग कर पाएंगे।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण:

- **'विद्यालय पाठ्यक्रम में संगीत शिक्षा का महत्व'**

मृणाल चक्रवर्ती

असिस्टेंट प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन डी.एस. कॉलेज,

कटिहार

उपरोक्त संबंधित साहित्य के अंतर्गत संगीत को अभिन्न अंग के रूप में बताते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए संगीत को महत्वपूर्ण योगदान के रूप में माना है।

"आपके अनुसार विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करने में संगीत शिक्षा अपना अमूल्य योगदान दे सकती है। संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के दौरान विद्यार्थी अपनी आंतरिक क्षमताओं का विकास कर सकता है तथा समाज में बेहतर नागरिक बन सकता है।"

- **स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उत्तर भारतीय संगीत के विविध आयाम**

डॉ. शुचि गुप्ता
संगीत विभाग में शिक्षिका के पद पर कार्यरत
किशन लाल पब्लिक कॉलेज
रेवाड़ी

आपके अनुसार "बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा संगीत के माध्यम से होनी आवश्यक है। इस प्रकार से परिपक्व होते बच्चों में एकता एवं सद्भाव उत्पन्न करने में संगीत शिक्षा के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। संगीत शिक्षा के माध्यम से बच्चे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से अवगत होते हैं। क्योंकि संगीत सभ्यता एवं संस्कृति से पूरी तरह जुड़ा हुआ है।"

- **प्राथमिक शाला में संगीत शिक्षण**

http://scert.cg.gov.|n/dedstudy/kalaun|t2.pdf

उपरोक्त संबंधित साहित्य के अनुुसार "हमारी वर्तमान शालाओं की शिक्षण मर्यादा नितांत सीमित और छोटी है। विद्यालय अर्थात् जो लेखन, वाचन अथवा गणित विषय सिखाए। विद्यालय अर्थात् जो व्यवहार के साधन प्रदान करें । लेखन, वाचन, गणित तो सबको चाहिए ही चाहिए। इनके बगैर आदमी का काम नहीं चल पाता। इनके बिना आगे की पढ़ाई नहीं की जा सकती। लेकिन संगीत व्यवहार का विषय नहीं है। इसके बिना व्यक्ति समाज में तथा जीवन में अपना व्यवहार चला सकता है। अनपढ़ व्यक्ति निकम्मा है, पर न गाने वाले या संगीत न समझने वाले को निकम्मा कोई नहीं कहेगा और पढ़ा-लिखा वह है जो वाचन कर सके, लिख सके, हिसाब कर सके। ऐसे में व्यापारिक नजरिये से चलने वाली शालाओं में से संगीत बाहर रह गया हो तो यह स्वाभाविक ही है।"

विषय कथन:

शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य हेतु "संगीत विधा के माध्यम से ग्रामीण परिवेश के बच्चों का कलात्मक विकास" विषय का चुनाव किया है ।

अध्ययन का उद्देश्य:

- ग्रामीण बच्चों में संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न कराई जाएगी।
- उक्त शोध के द्वारा संगीत विद्या के माध्यम से ग्रामीण परिवेश के बच्चों का कलात्मक विकास (संगीत कला) कराया जाएगा ।
- संगीत द्वारा आत्मविश्वास व आत्मअभिव्यक्ति का विकास कराया जाएगा ।
- ग्रामीण बच्चों को लोक संगीत की जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी ।
- ग्रामीण बच्चों को प्रारंभिक अलंकारों व रागों का ज्ञान दिया जाएगा।
- नैदानिक शिक्षण द्वारा बच्चों व बच्चों के समूह को विषय विशेष से संबंधित समस्या या कठिनाई का निवारण किया जाएगा ।

अध्ययन की परिकल्पना:

- संगीत विधा का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है ।
- संगीत के माध्यम से विद्यार्थियों का कलात्मक विकास संभव है ।
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है ।

विषय परिसीमांकन:

प्रस्तुत शोध कार्य निश्चित समय एवं कार्य की सीमा को ध्यान में रखते हुए चयनित गाँव के 8-16 वर्ष तक की आयु के बच्चों की तुलना करने के पश्चात बच्चों के कलात्मक विकास (संगीत कला) करने तथा क्षेत्रीय लोकसंगीत, अन्य क्षेत्रीय लोकसंगीत, अलंकार एवं प्रारंभिक 5 रागों को सिखाने तक सीमित रहेगा।

अध्ययन की विधि:

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयोगात्मक विधि, तुलनात्मक विधि, साक्षात्कार विधि, निरीक्षण विधि एवं नैदानिक विधि का प्रयोग किया जाएगा ।

अध्ययन के स्त्रोत:

प्रस्तुत शोध कार्य में ग्रामीण विद्यालय, गाँव में लोक संगीत से जुड़े हुए लोगों का साक्षात्कार, ग्रामीण परिवेश में प्रयोग किये जाने वाले वाद्य यंत्र एवं कुछ आवश्यक संगीत वाद्ययंत्र इत्यादि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की उपयोगिता:

ग्रामीण परिवेश के बच्चों के व्यक्तित्व विकास हेतु संगीत विधा अपना अमूल्य योगदान दे सकती है । संगीत बच्चों में कलात्मक जागरूकता, आत्मअभिव्यक्ति, आत्मविश्वास तथा विभिन्न संस्कृतियों का सहजता से विकास करने में सहायक होगा । संभव है कि निकाले गए निष्कर्षों से बच्चों में संगीत के प्रति रुचि बढ़ेगी व उनका संगीत से जुड़ाव होगा ।

अध्ययन के सोपान:

- **भूमिका**
- **प्रथम अध्याय:** संगीत विधा का अध्ययन
- **द्वितीय अध्याय:** ग्रामीण परिवेश व संगीत
- **तृतीय अध्याय:** ग्रामीण परिवेश में गायन विधा संबंधित शिक्षण
- **चतुर्थ अध्याय:** संगीत विधा के माध्यम से ग्रामीण परिवेश के बच्चों का सांगीतिक निरीक्षण
- **पंचम अध्याय:** संगीत विधा के माध्यम से ग्रामीण परिवेश के बच्चों के कलात्मक विकास (संगीत कला) का परिणाम
- **निष्कर्ष**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
1	भारतीय संगीत की शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर	डॉ. मधुबाला सक्सेना	पृष्ठ -28
2	कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग - 2	डॉ. मोनिका श्रीवास्तव	पृष्ठ -7
3	प्राथमिक शाला में संगीत शिक्षण	एस. सी. आर. टी. रायपुर	पृष्ठ -1
4	उत्तर भारतीय संगीत के विविध आयाम	डॉ. शुचि गुप्ता शर्मा	पृष्ठ -67
5	विद्यालय पाठ्यक्रम में संगीत शिक्षा का महत्त्व	मृणाल चक्रवर्ती	पृष्ठ -55

पत्रिका -

क्रम संख्या	पत्रिका का नाम एवं प्रकाशन वर्ष	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
1	संगीत शिक्षण के विद्यार्थियों को निर्देश, संगीत पत्रिका, मई, 1976,	डॉ. जयचन्द शर्मा	पृ. 33

वेबसाइट एवं पेज लिंक-

क्रम संख्या	वेबसाइट एवं पेज लिंक
1	http://scert.cg.gov.ln/dedstudy/kalaunlt2.pdf